ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

सूर्यबाला की कहानियों में आधुनिक मूल्यबोध

सविता रानी

शोधार्थी पीएच.डी. हिन्दी,
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग, मानविकी संकाय
केन्द्रीय विश्विद्यालय हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला
banyal.neeraj@gmail.com

वर्तमान काल में आधुनिकता मात्र एक विचारधारा ही नहीं है। अपितु आज यह समाज का दृष्टिकोण बन चुका है, जीवन-यापित करने का तरीका तथा समाज के व्यवहार की पहचान बन चुका है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति भाषा, आचरण, परिधान, जीवन के प्रत्येक पक्ष व परिवेश तक को आधुनिक बनाने की अंधाधुंध दौड़ में शामिल है। आधुनिकता विचारों के प्रति मनुष्य की सजगता नहीं रही है बल्कि आज के मानव का स्थिति सूचक और पद प्रतिष्ठा का महत्व अंकित करने वाला साधन बन चुका है। आधुनिकता की सार्थकता को सही अर्थों में स्वीकार करने की अपेक्षा समाज इसे स्थिति बोध के रूप में अनिवार्य प्रमुखता का प्रारूप देता जा रहा है। आधुनिकता बोध से उत्पन्न असंख्य प्रश्नों, समस्याओं, हानि एवं आडम्बरयुक्त मानवीय जीवन के आवश्यक सन्दर्भों को अनेक लेखकों द्वारा अपने साहित्य में उजागर करने का सफल प्रयास किया गया है। प्रसिद्ध समकालीन लेखिका सूर्यबाला की कहानियाँ भी आधुनिक मूल्यबोध का एक स्पष्ट चित्रण साहित्य में प्रस्तुत करती हैं।

सूर्यबाला की अनेक कहानियाँ जैसे – गृह प्रवेश, अनाम लम्हों के नाम, आखिरी विदा, उतरार्द्ध, दिशाहीन, साँझवाती, माय नेम इश ताता, बिहिश्त बनाम मौजीराम की झाड़ू, एक लॉन की जबानी, सीखचों के आर-पार, उत्सव, दादी और रिमोट, बाउजी और बंदर, पूर्णाहुति, इस धरती के लिए आदि में आधुनिक मूल्यबोध के विभिन्न संदर्भों को अंकित किया गया है। औद्योगिकरण, विज्ञान तथा तर्क के परिणाम स्वरूप उत्पन्न आधुनिकता ने मानवीय जीवन के मूल्यों को अत्यधिक प्रभावित किया है। आज मानव अनिवार्य एवं परंपरागत मानवीय मूल्यों की अपेक्षा आधुनिक मूल्यबोध की ओर अधिक आकर्षित है। इस आकर्षण के परिणाम स्वरूप मानव अपने वास्तविक जीवन मूल्यों को ह्रासित कर रहा है। इस ह्रास के कारण समाज विविध विसंगतियों व समस्याओं का सामना करने के लिए विवश है। आधुनिकता के आवरण में लिपटा हुआ मानव केवल स्वयं तक केन्द्रित है। भौतिक सुख – सुविधाओं की प्राप्ति तथा अर्थोपार्जन हेतु मनुष्य दिन – रात में अन्तर करना भूल चुका है। फलतः अकेलेपन, अजनबीपन, घुटन और संबंधों में आत्मीयता के अभाव की झलक साफ दिखाई पड़ती है। 'चोर दरवाजे' कहानी का यह

कथन इस तथ्य का प्रमाण है, "काश ! हममें से भी कोई एक बेटे की ही तरह उठ जाता, दूसरे को निजात देते हुए !.... हम साथ – साथ जी पाने के लिए और कितना क्या करें ? रात बीत रही है और एक राहत सी। बीता एक और दिन।"[1] इस कथन के द्वारा पता चलता है कि आधुनिक मानव अर्थोपार्जन तथा आधुनिक बनने के चक्कर में अपने परिवार यहाँ तक कि स्वयं को भी भूल चुका है। पारिवारिक संबंधों में उत्पन्न कड़वाहट का यही मुख्य उत्तरदायी कारण है।

'चोर दरवाजे' कहानी के मुख्य पात्र पति - पत्नी आधुनिक बनने की होड़ में इस तरह व्यस्त हो चुके थे कि वह सम्पूर्ण तौर पर अपनी संतान और स्वयं एक – दूसरे तक को आत्मिक एवं भौतिक रूप से विस्मृत कर चुके हैं। अपने इस एकाकीपन और विस्मृति का एहसास उन्हें ऐसे क्षण में होता है जब वे जीवन की प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करते हैं। नायिका हाथ से फिसली हुई रेत के समान रिश्तों को दोबारा सहेजने का प्रयास करना चाहती है किन्तु वह स्वयं को पूर्णत: असमर्थ महसूस करती है। यह असमर्थता कुंठा, तनाव, संत्रास और अकेलेपन का कारण बनती है। इन मानसिक विक्षिप्तियों के कारण नायिका घर के परिवेश को बोझिल और बनावटी रूप में आभासित करने लगती है। यह कहानी आधुनिक बन रहे समाज को सचेत बनाने का एक सफल ज़रिया है जो मनुष्य को उसकी वास्तविकता से रूबरू करवाता है। आधुनिकता भले ही मानव को भौतिक सुख – सुविधाओं से सज्जित परिवेश उपलब्ध करवाती है किन्तु इस परिवेश में मानव को किस स्तर तक सीमित रहना है यह उसके उपर निर्भर है। अतः यह आवश्यक है कि प्रथमतः आधुनिकता के सत्य अर्थ को मनुष्य अवश्य आत्मसात करने का प्रयास करे।

आधुनिक मूल्यों का अनुकरण करता मानव अपने परंपरागत व आदर्शवान मूल्यों को भी नकारने लगा है। जिसके कारण पारिवारिक विघटन, दाम्पत्य जीवन में बढ़ता अविश्वास तथा मानवीय संबंधों में व्याप्त स्नेह भाव में कमी आदि समस्याओं की उत्पति हुई है। साँझवाती कहानी पारिवारिक तथा माता – पिता के प्रति संतान के बदलते नजरिए को स्पष्टता पूर्वक प्रस्तुत करती है। कहानी में तीनों भाई एकल परिवार में रहते हैं यहाँ तक की माता - पिता का भी बंटवारा कर लिया जाता है। संयुक्त परिवार के मुखिया रहे नौज (मुख्य पात्र) भी अपने परिवार के इस विघटन को नहीं रोक सके। अपने बेटे व बहुओं की स्वतंत्रता की माँग के समक्ष नौज व उसकी पत्नी के सभी पारिवारिक मूल्य छिन्न – भिन्न हो गए। आधुनिक जीवन शैली में व्यस्त परिवार का प्रत्येक सदस्य केवल स्व तक सीमित है। घर के बच्चे भी माता – पिता की अनावश्यक व्यस्तता के कारण उनसे लगाव महसूस नहीं करते। आधुनिक कहलाने के लिए औरतें परिवार की उपेक्षा कर पार्टी और समारोह में शिरकत करना अधिक पसंद करती हैं। फलतः परिवार का हर सदस्य एक अलग ही दुनिया में जीवन यापित कर रहा है कोई भी व्यक्ति एक – दूसरे के

प्रति स्नेह या अपनेपन का भाव नहीं रखता। अपितु परिवार में एक अजनबीपन सा झलकता है जो पारिवारिक जीवन की खोखली हो चुकी नींव की ओर इशारा करता है। कहानी में यह भी दिखाने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक बनावटी जीवन के कारण नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी और उसके सार्थक मूल्यों की अवहेलना कर रही है। कहानी में नौज और उसकी पत्नी इस सोच के कारण ही अपने तीनों पुत्रों द्वारा त्याग दिए जाते हैं। आधुनिकता की होड़ में डूबे युवा वर्ग का यह निषेध सामाजिक दृष्टि से अत्यंत चिंतनीय विषय है।

दिशाहीन कहानी भी परिवार के इस बदलते स्वरूप की ओर इशारा करती है। पारिवारिक विघटन, अर्थोपार्जन में लिप्त मानव, आधुनिकता की मदान्धता आदि विषय कहानी की विषय – वस्तु के रूप में वर्णित हैं। दाम्पत्य जीवन में आई कटुता को सूर्यबाला ने अनाम लम्हों के नाम, उतरार्द्ध, सीखचों के आर पार, चोर दरवाजे आदि कहानियों में उजागर किया है। मानवीय संबंधों में उत्पन्न इस उष्णता के अभाव में रिश्तों के वास्तविक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। मानवीय संबंधों में उत्पन्न इस गिरावट का कारण नवीन आधुनिक मूल्य हैं जिसकी आड़ में मनुष्य समाज की अनिवार्य परंपरागत विचारधारा को नष्ट कर रहा है। आधुनिकता के कारण वर्तमान मनुष्य नैतिक स्तर पर भी पिछड़ा हुआ प्रतीत हो रहा है। आधुनिक बनने की अकाँक्षा व स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के मोह में मनुष्य नैतिक मूल्यों को भूल चुका है। आधुनिक नैतिकता अपने प्राचीन रूप से सर्वथा भिन्न है। नैतिकता का यह बदला हुआ स्वरूप प्राचीन मूल्यों को न तो स्वीकार करता है और न ही आदर्शगत प्राचीन परंपराओं को अपनाना चाहता है। परिवारों का टूटना, तलाक की समस्या, रिश्तों में बढ़ती शून्यता, आत्म – केन्द्रित मनुष्य तथा धन लालसा में लिप्त मानव आदि कई ऐसी समस्याएँ हैं जो वास्तव में समस्या न हो कर हमारी नैतिक गिरावट के कारण उत्पन्न परिस्थितियाँ हैं। नैतिक मूल्यों का ह्रास होने के फलस्वरूप मानव संवेदनहीन यांत्रिक उपकरण बन चुका है। यह यांत्रिक जीवन न तो समाज के विकास में सहायक है और न ही मानव जाति के संवर्द्धन में उत्प्रेरक। तथ्यों व तर्क पर आधारित मानव जीवन परंपरागत नैतिक मूल्यों के अभाव में विश्रृंखलित होता जा रहा है।

नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण मानव मानसिक रूप से विक्षिप्तता का शिकार हो रहा है। घुटन, कुंठा, ऊब, निराशा, शून्यता, अकेलापन, द्वंद्व आदि मानसिक अवसाद मनुष्य को जकड़ रहे हैं। "असंबद्धता, अजनबीपन, अकेलापन, हीनता, व्यर्थता, असंगतता, हताशा तथा आत्महत्या की दिशा – यह सारी मानसिकता पूराने मान – मूल्यों के टूटने की विवशता से पैदा हुई थी।"[2] अर्थात इन सभी मानसिक पीड़ाओं की उत्पति का कारण है अधुनातन बनने की तीव्र इच्छा के बहाव में अनिवार्य परंपरागत नैतिक

मूल्यों को नकारना। मनुष्य नवीन बनने की अकाँक्षा तो रखता है लेकिन अपनी संकीर्ण मानसिकता का त्याग नहीं करना चाहता। मानवीय संबंध, सामाजिक सन्दर्भ तथा समाज के प्रति वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन निष्पक्ष रूप से न कर पाने के कारण उसका मनस्तल द्वंदात्मक स्थिति का सामना कर रहा है। यथा, "चारों तरफ असंख्य भट्ठियाँ दहक रही हैं। आँखों के कोए तरतराए हैं और मेरा समूचा वजूद एक बेनाम बेचारगी और तिलमिलाहटों की तहों में घुटता, छटपटा उठता है।"[3] इन पंक्तियों में लेखिका ने अकेलेपन, घुटन, कुण्ठित जीवन का उपभोग कर रहे आधुनिक मनुष्य के जीवन की वास्तविकता को उजागर किया है। साथ ही यह भी दर्शाया गया है कि नैतिक मूल्यों के अभाव तथा आधुनिकता के अतिश्योक्ति उपभोग के कारण मनुष्य के मानसिक विकार एवं शारीरिक व्याधियों की उत्पति का सबसे प्रमुख कारण है।

आधुनिक मूल्यबोध का आकर्षण तथा नयापन अपनाने की इस होड़ में मनुष्य का जीवन खोखला हो चुका है। संवेदनाओं का उसके जीवन में कोई महत्व नहीं रह चुका है। सूर्यबाला की कहानी संताप, मातम आदि में संवेदनहीन आधुनिक मानव के इसी खोखलेपन को दर्शाने का प्रयास किया गया है। इन कहानियों के माध्यम से यह भी दिखाने का प्रयास हुआ है कि जीवन के इस खोखलेपन के बावजूद भी मनुष्य स्वयं को समाज के लिए हितकारक समझता है। संताप कहानी ऐसे ही मानव की सोच पर एक तीखा प्रहार है। कहानी की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं, "वह तो कहो, हेमंत भईया बच गए । बच गए ? क्या वे भी कूदे थे क्या ? अरे नहीं.... बड़ी समझदारी का काम किया उन्होंने कि नहीं कूदे।"[4] इन पंक्तियों के द्वारा हेमंत की कायरता का विश्लेषण हुआ है साथ ही हेमंत की खोखली मानसिकता का भी परिचय मिलता है। हेमंत जैसे लोग अपने इस खोखलेपन को समाज के ऊपर एक एहसान के रूप में देखते हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि अनुभूति विहीन यह खोखलापन मात्र एक दिखावा है जिसका समाज या मानवीयता से कोई लेना – देना नहीं है। हेमंत स्वयं को आधुनिक और समय के साथ चलने वाला आधुनिक मानव सिद्ध करने के लिए अपने बच्चों की मृत्यु को साधन बनाता है। वह अपनी सामाजिक छवि को अधुनातन बनाए रखने के लिए बच्चों व पत्नी को विस्मृत कर देता है। उसकी यह प्रवृति ही उसके अन्दर की मानवीयता को समाप्त कर उसे एक संवेदनहीन व्यक्ति बना देती है जिसका विस्तृत वर्णन कहानी के अन्दर देखने को मिलता है।

वर्तमान समय में आधुनिकता के नाम पर मनुष्य बहुत अधिक विकसित हो चुका है। समाज का प्रत्येक मनुष्य आधुनिक तौर – तरीकों तथा आधुनिक मूल्यों का वाहक है लेकिन नारी के पक्ष में यह दृष्टिकोण अनेकानेक समस्याएँ भी उत्पन्न करता है। सूर्यबाला ने अपनी कहानियों में आधुनिक मूल्यबोध

से जूझती नारी के संघर्ष को वर्णित किया है। समाज नारी को आधुनिक भी बनाना चाहता है पर वह समाज निर्मित रुढियों, परंपराओं और रीतियों का भी पालन करे इस तथ्य को भी अनिवार्यता दी जाती है, जो कतई संभव नहीं है। हाँ, यह सत्य है कि आधुनिक नारी अपनी प्राचीन स्थिति की अपेक्षा विकसित परिवेश में खड़ी है। परन्तु इन विकसित परिस्थितियों में भी उसे अपने जीवन, अकाँक्षाओ, विचारों आदि के साथ एक अनावश्यक समझौता करना पड़ता है। सूर्यबाला कृत सीखचों के आर-पार कहानी एक आधुनिक तथा परंपरागत आदर्शों का निर्वहन करने वाली दो अलग – अलग नारी जीवन के प्रमुख बिन्दुओं को उद्घाटित करने वाली कहानी है। रूढ़िगत समाज यह तो चाहता है कि नारी शिक्षित हो, नौकरी करे लेकिन समस्त जीवन पुरुष के समकक्ष होने का प्रयास न करे। यदि वह केवल आजीविका कमाती है और अन्य गृहणी जनक कार्यों की उपेक्षा करती है तो यह समाज के लिए बहुत खतरनाक स्थिति है ऐसी सोच रखने वाला मनुष्य कितना आधुनिक बन पाया है इस कहानी में उसका व्यापक विश्लेषण है। इस थोपी गई आधुनिकता के कारण नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जो उसके असंतोष, मानसिक उद्विग्नता तथा वैयक्तिक बिखराव का प्रमुख कारण बन रहा है।

सूर्यबाला की समस्त कहानियाँ यथार्थ के द्वंद्व में उलझे हुए आधुनिक समाज का विस्तृत अध्ययन है । आधुनिकता व आधुनिक मूल्यबोध से लिपटा हुआ समाज आधुनिकता को उसके मानक अर्थों में स्वीकार न करते हुए विपरीतजन्य दिशा की ओर अग्रसर हुआ है। इसके परिणामस्वरूप आधुनिक मूल्य मानव व समाज के लिए सहायक नहीं अपितु भ्रामक के रूप में कार्य कर रहे हैं। सूर्यबाला की कहानियाँ आधुनिकता मूल्यबोध व परम्परावादी मूल्यों की टकराहट का चित्रण उकेरती हैं। डॉ. चन्द्रकला त्रिपाठी के शब्दों में, "सूर्यबाला यहाँ प्रदर्शन प्रियता का शिकार हो चुके छिन्नमूल व्यक्तियों की सचाईयाँ लिखती हैं। इनके सुख – दुःख, तनाव, संघर्ष आदि के वर्णन में 'विडंबना' को वे गहरे भीतरी अर्थ में उभारती हैं।"[5] इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि सूर्यबाला ने आधुनिक समाज के द्वंद्व ग्रस्त जीवन, घुटन, कुंठा और ऊब से भरी मानवीय जीवन शैली एवं समसामयिक समस्याओं के शिकार बने मानव के यथार्थ जीवन को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रकट किया है। आधुनिक मूल्यबोध के कारण उत्पन्न अनेकानेक समस्याओं के अंकन के साथ लेखिका ने इसके लिए उत्तरदायी तत्वों की ओर भी ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। अपनी सजग यथार्थ दृष्टी के फलस्वरूप ही वे अपनी कहानियों में जहाँ इस द्वंदात्मक संघर्ष का चित्रण प्रस्तुत कर पाई हैं वहीँ दूसरी ओर इन परिस्थितियों से जूझने के समाधानों का भी लेखिका ने प्रस्तुतीकरण किया है। अपने साहित्य के द्वारा समाज के लिए कुछ कर –

गुजरने की अपनी आत्मशक्ति के बल पर ही सूर्यबाला ने अपनी कहानियों को समाज की सशक्त आवाज़ बनाया है ।

सन्दर्भ :

1. सूर्यबाला, कात्यायनी संवाद, , ग्रन्थ अकादमी, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002, संस्करण – 2011 पृष्ठ – 72
2. मोहन राकेश, साहित्य और संस्कृति, राधाकृष्ण प्रा. लिमिटेड, दरियागंज, नयी दिल्ली – 110002, संस्करण – 2011 पृष्ठ – 16
3. सूर्यबाला, इक्कीस कहानियाँ, सुनील साहित्य सदन, नयी दिल्ली, संस्करण – 2011 पृष्ठ – 43
4. वही, पृष्ठ – 59
5. डॉ. दामोदर खडसे, सूर्यबाला का सृजन संसार, अमन प्रकाशन, कानपुर – 208012 (उ० प्र०), संस्करण – 2017 पृष्ठ – 166